हिन्दी व्याकरण तथा शब्द-रचना

(क) वर्तनी तथा विराम-चिह्न

वर्तनी

वर्तनी—वर्तनी से आशय शब्दों की शुद्धि से होता है कि कोई शब्द शुद्ध रूप में किस प्रकार लिखा जाता है, अर्थात् किसी शब्द के शुद्ध हिज्जे (स्पेलिंग) को वर्तनी कहा जाता है।

वर्तनी की शुद्धि निरन्तर अभ्यास पर निर्भर होती है। हिन्दी-भाषा में वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ प्राय: निम्नलिखित प्रकार की होती हैं—

(1) स्वर या मात्रा सम्बन्धी अशुद्धियाँ,
(2) व्यंजन सम्बन्धी अशुद्धियाँ,
(3) समास सम्बन्धी अशुद्धियाँ,
(4) सन्धि सम्बन्धी अशुद्धियाँ,
(5) विसर्ग सम्बन्धी अशुद्धियाँ,
(6) हलन्त सम्बन्धी अशुद्धियाँ।

उपर्युक्त समस्त प्रकार की अशुद्धियों से सम्बन्धित आवश्यक बातें निम्नलिखित हैं—

(1) स्वर या मात्रा सम्बन्धी अशुद्धियाँ

जब अशुद्धियाँ स्वर अथवा उनकी मात्राओं के त्रुटिपूर्ण प्रयोग के कारण होती हैं तो उन्हें स्वर सम्बन्धी अशुद्धियाँ कहा जाता है। इनके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं—

'अ' और 'आ'

'अ' के स्थान पर 'आ' के प्रयोग की भूलें सामान्यत: देखने को मिलती हैं—

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
गत्यावरोध	गत्यवरोध	अत्याधिक	अत्यधिक
आधीन	अधीन	अनाधिकार	अनधिकार

कई बार 'आ' के स्थान पर 'अ' लिखने की भूलें होती हैं—

स्वभाविक	स्वाभाविक	व्यवसायिक	व्यावसायिक
बदाम	बादाम	नलायक	नालायक
स्वध्याय	स्वाध्याय	संसारिक	सांसारिक

'आ' की मात्रा के अन्तर से 'स्वागत' और 'स्वगत' तथा 'सामान' और 'समान' शब्द बनते हैं जबकि इन शब्दों के अर्थ में भी भिन्नता है।

'इ' और 'ई'

प्राय: लिखते समय 'इ' के स्थान पर 'ई' का अशुद्ध प्रयोग हो जाता है—

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
नीती	नीति	क्षत्रीय	क्षत्रिय

तिथी	तिथि	शान्ती	शान्ति
मुनी	मुनि	प्रीती	प्रीति

साथ ही 'ई' के स्थान पर 'इ' का प्रयोग भी दिखाई देता है—

निरिक्षण	निरीक्षण	सूचि-पत्र	सूची-पत्र
प्रतिक्षा	प्रतीक्षा	लिजिए	लीजिए
दिवाली	दीवाली	दिजिए	दीजिए

'उ' और 'ऊ'

भानू	भानु	बन्धू	बन्धु
साधू	साधु	सूई	सुई
हेतू	हेतु	सिन्धू	सिन्धु

इसके विपरीत 'ऊ' के स्थान पर 'उ' का भी अशुद्ध प्रयोग देखने को मिलता है—

सिन्दुर	सिन्दूर	हिन्दु	हिन्दू
पुज्य	पूज्य	पुँजी	पूँजी
रुप	रूप	आँसु	आँसू

'ए' और 'ऐ'

'ए' के स्थान पर 'ऐ' की भूलें—

मैला (गन्दा)	मेला (उत्सव)	सैर (घूमना)	सेर (वजन)
चैयरमैन	चेयरमैन	बैल (जानवर)	बेल (फल)
वैश्या	वेश्या	सैन (संकेत)	सेन

'ऐ' के स्थान पर 'ए' का प्रयोग—

वेसा	वैसा	वेश्य	वैश्य
सेनिक	सैनिक	चेन (जंजीर)	चैन (शान्ति)
जेसा	जैसा	पेसा	पैसा

'ओ' और 'औ' के प्रयोग की भूलें—

इस प्रकार की अशुद्धियाँ सामान्यत: अधिक दिखाई देती हैं; क्योंकि इन स्वरों की मात्राओं से अनेक ऐसे शब्दों का निर्माण होता है जिनका अर्थ मात्रा के परिवर्तन से बदल जाता है। यहाँ कतिपय ऐसे शब्दों की ओर संकेत किया जा रहा है—

कोर (किनारा)	कौर (ग्रास)	ओर (तरफ)	और (तथा)
खोलना (मुक्त क़रना)	खौलना (उबलना)	शोक (दु:ख)	शौक (व्यसन)
कोड़ी (बीस का समूह)	कौड़ी (वराटिका)		

अनेक बार 'औ' के स्थान पर 'ओ' का प्रयोग अशुद्धियों का कारण बन जाता है—

भोतिक	भौतिक	योवन	यौवन
मोन	मौन	ओपचारिक	औपचारिक

मात्राओं का सही प्रयोग न करने के कारण होने वाली वर्तनी सम्बन्धी भूलें

'इ' की मात्रा का प्रयोग न करने के कारण उत्पन्न वर्तनी की भूलें—

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
कठनाई	कठिनाई	मलन	मलिन
वाहनी	वाहिनी	कुमुदनी	कुमुदिनी
पुजारन	पुजारिन	शिवर	शिविर

अनेक शब्दों में 'इ' की मात्रा का अधिक प्रयोग अथवा गलत स्थान पर भी प्रयोग किया जाता है—

कवियित्री/कवियत्री	कवयित्री	रचियिता/रचियता	रचयिता

स्वर और मात्रा के अधिक प्रयोग के कारण होने वाली अशुद्धियाँ—

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
पहिनना	पहनना	किरषी	कृषि
छपकली	छिपकली	प्रदर्शिनी	प्रदर्शनी
सामिग्री	सामग्री	वापिस	वापस
महिनत	मेहनत	पहिला	पहला

अनुस्वार तथा चन्द्रबिन्दु से सम्बन्धित अशुद्धियाँ

(1) चन्द्रबिन्दु के स्थान पर अनुस्वार का त्रुटिपूर्ण प्रयोग—

ऊंट	ऊँट	फांसी	फाँसी
अंगीठी	अँगीठी	दांत	दाँत
अंधेरा	अँधेरा	भंवरा	भँवरा
आंधी	आँधी	आंख	आँख
ऊंचा	ऊँचा	जहां	जहाँ

(2) अनुस्वार के स्थान पर चन्द्रबिन्दु का भी त्रुटिपूर्ण प्रयोग होता है—

गाँधी	गांधी	अँगूर	अंगूर
अँगारा	अंगारा	अँजुली	अंजुली
अँगुरि	अंगुरि	अँगुली	अंगुली

(3) प्रत्येक वर्ग (कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग) का पाँचवाँ वर्ण (ङ, ञ, ण, न, म) जब आधा रहता है तो उसे अनुस्वार (ं) के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। यह अनुस्वार सदैव पूर्व-वर्ण पर ही लगेगा; जैसे—

दंत (दन्त), पंप (पम्प), संबंध (सम्बन्ध), कंपन (कम्पन), हिंदू (हिन्दू) आदि।

(4) 'य', 'र' वर्णों से पूर्व आने वाला पंचम वर्ण अनुस्वार के रूप में परिवर्तित नहीं होता—

(i) अन्याय, धान्य, मान्य, सामान्य, जन्य, वन्य, सन्यास, हन्यमान्, अभिमन्यु।

(ii) सौम्या, धौम्या, सम्यक्, नम्य, अम्लान।

(iii) साम्राज्य, सम्राज्ञी, उम्र, नम्र।

(5) 'न', 'म' वर्णों का द्वित्व ('न्' के बाद 'न' तथा 'म्' के बाद 'म') होने पर दोनों मूल रूप में लिखे जाते हैं, उनका अनुस्वार प्रायः नहीं होता; यथा—

(i) अन्न, विपन्न, सम्पन्न, प्रपन्न, पन्नग, पन्ना, भिन्न, सन्न।

(ii) अम्मा, सम्मान, सम्मोहन, सम्मुख, सम्मिलित।

(6) प्रायः 'श' तथा 'स' से पूर्व आने वाला पंचम वर्ण अनुस्वार में बदल जाता है; यथा—वंश, वंशी, नृशंस, ध्वंस, हंस, संस्मरण, संस्कार, संस्कृत, संस्था, संस्तुत।

(2) व्यंजन सम्बन्धी अशुद्धियाँ

'ण' और 'न' का अशुद्ध प्रयोग—

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
पुरान	पुराण	रामायन	रामायण
रनभूमि	रणभूमि	मरन	मरण
वेनु	वेणु	गुन	गुण

'ब' और 'व' की अशुद्धियाँ

'व' के स्थान पर 'ब' का अशुद्ध प्रयोग—

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
बसुदेव	वसुदेव	बाल्मीकि	वाल्मीकि
बिकार	विकार	बर	वर
बसिष्ठ	वसिष्ठ	बसंत	वसंत

'ब' के स्थान पर 'व' का अशुद्ध प्रयोग—

विंदु	बिंदु	विजली	बिजली
वाजार	बाजार	वाग	बाग

'व' और 'ब' के अशुद्ध प्रयोग से कई शब्दों के अर्थ बदल जाते हैं—

वेला	समय	वार	आघात
बेला	एक फूल का नाम	बार	आवृत्ति
वाद	मुकदमा	बाद	पीछे

'य' और 'ज' के प्रयोग की अशुद्धियाँ—

जादव	यादव	जशोदा	यशोदा
जम	यम	जजमानी	यजमानी
जोग	योग	जमुना	यमुना

'श', 'ष', 'स' के प्रयोग की अशुद्धियाँ

'श' के स्थान पर 'स'—

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
कलस	कलश	हमेसा	हमेशा
सोचनीय	शोचनीय	सासन	शासन

'स' के स्थान पर 'श'—

आशमान	आसमान	किशान	किसान
लश्शी	लस्सी	शाबुन	साबुन

'ष' के स्थान पर 'श' या 'स'—

शोशक	शोषक	दुस्कर	दुष्कर
घोस	घोष	भास्य	भाष्य

कुछ शब्दों में 'स' और 'श' का अशुद्ध प्रयोग अर्थ ही बदल देता है—

शाला	भवन	शंकर	शिव
साला	पत्नी का भाई	संकर	मिश्रित
शाख	शाखा	शर	बाण
साख	प्रतिष्ठा	सर	सरोवर

'ष्ठ' और 'ष्ट' की अशुद्धियाँ

'ष्ट' के स्थान पर 'ष्ठ' की भूल—

अभीष्ठ	अभीष्ट	सम्पुष्ठ	सम्पुष्ट
सन्तुष्ठ	सन्तुष्ट	आकृष्ठ	आकृष्ट
इष्ठ	इष्ट	प्रविष्ठ	प्रविष्ट

'ष्ठ' के स्थान पर 'ष्ट' की भूल—

कनिष्ट	कनिष्ठ	ओष्ट	ओष्ठ
वरिष्ट	वरिष्ठ	निष्ट	निष्ठ
पृष्ट	पृष्ठ	वसिष्ट	वसिष्ठ

'क्ष' और 'छ' की अशुद्धियाँ—

दीच्छा	दीक्षा	छण, छन	क्षण
शिच्छा	शिक्षा	छिति	क्षिति
नच्छत्र	नक्षत्र	नछत्र	नक्षत्र
भिच्छा	भिक्षा	छति	क्षति
कच्छा	कक्षा	छीण, छीन	क्षीण

इसके विपरीत 'छ' के स्थान पर 'क्ष' का भी अशुद्ध प्रयोग दिखाई देता है—

क्षत्र	छत्र	इक्षा	इच्छा
क्षड़ी	छड़ी	उक्षवास	उच्छ्वास
क्षद्म	छद्म	मूर्क्षा	मूर्च्छा

'ज्ञ' और 'ग्य' की अशुद्धियाँ—

ग्यान	ज्ञान	विग्य	विज्ञ
ग्याता	ज्ञाता	कृतग्य	कृतज्ञ
ग्यानी	ज्ञानी	ग्यापित	ज्ञापित